

ARS VERITATIS

मुक्त विज्ञान का घोषणापत्र

Per scientiam — ad lucem

२०२५

I. प्रस्तावना

महान कार्य का प्रथम चरण पूर्ण हो चुका है।

विश्व विघटित हो गया है, विज्ञान ने अपना अर्थ खो दिया है,

सत्य एक वस्तु बन गया है,

और विचार – स्वार्थ का दास।

हर बीतते दिन के साथ प्रतीक्षा और भी अपराध बनती जा रही है,

और अंत में, हम उस मूल्य को चुकाने के लिए तैयार नहीं होंगे

जो यह संसार हमसे मांगता है।

अब समय है पुनर्जागरण और चेतना के प्रकाश का।

हे ब्रह्मांड के अन्वेषकों – एक हो जाओ।

न महिमा के लिए।

न सत्ता के लिए।

बल्कि उसी प्रकाश के लिए जिसने मनुष्य को अंधकार से बाहर निकाला था।

II. Ars Veritatis

Ars Veritatis – सत्य को उसी रूप में देखने की कला है, जैसा वह है।

मुक्त विज्ञान वह है जो भय, लाभ और नियंत्रण से मुक्त हो।

वह न साम्राज्यों की संपत्ति है, न निगमों की, न फाउंडेशनों की।

वह स्वयं बुद्धि की संपत्ति है।

III. मुक्त विज्ञान के सिद्धांत

1. ज्ञान उन सभी का है जो उसे पाना चाहते हैं।
2. अनुसंधान की स्वतंत्रता।
3. जीवन के प्रति उत्तरदायित्व।

विज्ञान को लाभ के लिए विनाश नहीं करना चाहिए।

प्रत्येक प्रयोग में स्वैच्छिक सहमति, मानवता और जीवन के प्रति सम्मान आवश्यक है।

4. खुलापन और एकता।

विचार स्वतंत्र होना चाहिए, और संवाद ईमानदार।

5. विचारधारा से ऊपर सत्य।

विज्ञान सत्ता की दासी नहीं है।

6. उद्देश्य – जागृति।

ज्ञान को आत्मा को ऊँचा उठाना चाहिए, न कि उसे सुलाना।

IV. Ars Veritatis के उद्देश्य

1. मुक्त विज्ञान का एक वैश्विक नेटवर्क बनाना – जो शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और विचारकों को राजनीति और व्यापार से परे जोड़े।
2. ज्ञान तक खुले पहुँच को सुनिश्चित करना उन सभी के लिए जो ब्रह्मांड को समझना चाहते हैं।
3. ऐसा विज्ञान बढ़ावा देना जो हिंसा और शोषण से मुक्त हो।
4. सीमाओं और विचारधाराओं से परे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना।
5. समाज में चेतना का जागरण – सत्य और बुद्धि के प्रति सम्मान की पुनर्स्थापना।

V. समाज के लिए आह्वान

आज मैं बोलता हूँ – न किसी मंच से, न किसी प्रयोगशाला से,

बल्कि उस मौन के केंद्र से, जहाँ विचार जन्म लेते हैं।

हम युग की दहलीज़ पर खड़े हैं।

पुरानी संरचनाएँ अपनी ही झूठ की भार से ढह रही हैं।

तकनीक बढ़ रही है, पर आत्मा सोई हुई है।

मानव नीचे देखने लगा है –

स्क्रीन, संख्याओं और आँकड़ों में –

और उसने ऊपर देखना भूल गया है – तारों की ओर।

कल्पना कीजिए एक ऐसे संसार की, जहाँ सब कुछ संभव है,

और यह पाठ आपको याद दिलाए –

कि उसे साकार करने की शक्ति केवल हमारे भीतर है।

हमारी इच्छा। हमारा ज्ञान। हमारी एकता।

जो कोई इस पुकार को महसूस करता है,

वह पहले से ही *Ars Veritatis* का हिस्सा है।

न कोई शपथ आवश्यक है, न कोई सभा –

केवल यह इच्छा कि हम जानें

और उस प्रकाश को ले जाएँ जहाँ विस्मरण का अंधकार है।

VI. उपसंहार

दुनिया अब तक खोई नहीं है।

वह नए निर्माताओं की प्रतीक्षा कर रही है –

जो सोचने से नहीं डरते।

यदि सत्य का मार्ग कठिन है – तो वह कम से कम शुद्ध हो।

ज्ञान को फिर से अग्रि बनने दें, न कि जंजीर।

मनुष्य को फिर से अन्वेषक बनने दें, न कि उपभोक्ता।

बुद्धि को अपनी राख से उठने दें,

और स्मरण करने दें –

कि उसे क्यों बनाया गया था –

खोजने और समझने के लिए।

यदि तुम कुछ देखो - तो कुछ कहो।

Albedo — Ars Veritatis